बापू जी का रामराज्य

यह बात तो सर्वविदित है कि राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान तथा आज़ादी के बाद भी, अपनी प्रार्थना सभाओं का प्रारंभ 'रघुपति राघव राजा राम, पतित पावन सीता राम' के प्रार्थनागीत से करते थे। उन्होंने तथा लाखों ज्ञात एवं अज्ञात स्वतंत्रता सेनानियों ने भारत में रामराज्य की स्थापना के लिए अपने तन, मन और धन की बाजी लगा दी। उनके अथक प्रयासों और गुमनाम बलिदानों से हमें अंग्रेजों से आज़ादी तो मिली; लेकिन दुर्भाग्यवश हम देह अभिमान तथा उससे उत्पन्न होने वाले पाँच विकारों के गुलाम होते चले गए और रामराज्य लाने की बात तो दूर, हमने भारत में रावण राज्य ज़रूर स्थापन कर लिया है।

बापू जी के सपनों का भारत आज वैसा नहीं है, जिसकी उन्होंने कल्पना की थी। आज भी सीताओं का हरण होता है, आज भी शुभ कार्यों रूपी यज्ञ में दुष्ट व्यक्तियों रूपी राक्षसों द्वारा विघ्न पैदा किए जाते हैं। तो क्या कलियुग रूपी रावण राज्य बापू के रामराज्य में कभी तब्दील नहीं हो सकता है? ज़रूर हो सकता है; लेकिन उसके लिए हमें बेहद के बापू अर्थात् परमपिता परमात्मा को पहचानकर उसकी श्रीमत पर चलना होगा।

ये जो बेहद के बापू हैं, उन्हें भारत के बापू जी भी 'पतित पावन सीता राम' के रूप में याद करते थे और ये जो पतित-पावन सीता-राम हैं, वो कोई केवल भारत के या हिन्दुओं के भगवान या माई-बाप नहीं, अपितु सारे विश्व के मात-पिता हैं। इन्हें भारत में आदि देव, आदि देवी तथा आदिनाथ के रूप में तथा विदेशों में आदम-हव्वा या एडम-ईव के रूप में याद किया जाता है। भारत के बापू ने अंतिम साँस तक हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच एकता स्थापित करने की कोशिश की, किंतु वे मृदुल स्वभाव के होने के कारण भारत के विभाजन को रोक नहीं पाए और अपने ही देश के किसी धर्मांध व्यक्ति की गोली के शिकार हुए, किंतु विश्व के बापू न केवल हिन्दुओं और मुसलमानों को, अपितु सभी धर्मों, भाषाओं, राष्ट्रों की आत्माओं को एक सूत्र में बाँधते हैं, जिसकी यादगार वह माला है, जिसे सभी धर्मों की आत्माएँ जपती हैं।

सारे विश्व को एक सूत्र में बाँधने का आसान तरीका भी यह है कि हम स्वयं को यह नाग रूपी शरीर न समझ कर, मस्तकमणि ज्योति बिंदु आत्मा समझें। आत्मा अजर, अमर और अविनाशी है। जब आत्मा शरीर में रहते हुए शरीर के भान से न्यारी होती है–जैसे कि छोटे बच्चे धर्म या देहभान से न्यारे होते हैं–तो आत्मा पावन, गुणवान होती है। जब 5000 वर्ष पहले सभी भारतवासी आत्माभिमानी थे तो भारत में रामराज्य था; लेकिन 2500 वर्ष पहले, जब भारत समेत सारे विश्व के मनुष्य देहअभिमानी बन गए, तो विश्व में रावण राज्य या शोक वाटिका स्थापित हो गई। अब पुरुषोत्तम संगमयुग में वह बेहद का बापू या राम अर्थात निराकार परमपिता परमात्मा शिव फिर से इस सृष्टि पर आकर रामराज्य स्थापन करने का ज्ञान तथा पतित से पावन बनने की कला अर्थात सहज राजयोग सिखा रहे हैं। यदि हम स्वयं को आत्मा समझ बेहद के बापू की श्रीमत पर चलेंगे तो भारत के बापू का सपना अर्थात् रामराज्य साकार हो सकेगा। खण्डित भारत फिर से अखण्ड देवभूमि बन सकेगा।

ओमशान्ति।